अध्याय– पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष और सुझाव

5.1 भूमिका

5.2 समस्या कथन

5.3 शोध के चर

5.4 शोधकार्य के उद्देश्य

5.5 शोध की परिकल्पनाएँ

5.6 शोध की परिसीमाएँ

5.7 उपकरण और विधि

5.8 आंकडों का विश्लेषण

5.9 निष्कर्ष

5.10 सुझाव

5.11 शैक्षणिक उपयोग

अध्याय– पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष और सुझाव

5.1 भूमिका :–

राष्ट्र की उन्नती अनेक घटकों पर निर्भर करती है। इन घटको में शिक्षा का अपना विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। इसी कारण शिक्षा उद्देश्यपरक और उपयोगी होना आवश्यक है तथा समयानुसार उसमें परिवर्तन होना आवश्यक है।

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। बालक के सर्वांगीण विकास में भाषा का स्थान महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति में गुणवत्ता का स्तर बढ़ाने के लिए न्यूनतम अधिगम स्तर के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालयों में बच्चे भाषा सम्बन्धी, खासकर मातृभाषा सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करते है। यह ज्ञान प्राप्त करते समय उनके अधिगम में अनेक प्रकार की कठिनाईयॉ आती है, जिसके कारण उनका मातृभाषा का ज्ञान भी अशुद्धियुक्त बनता है। कुछ विद्यार्थी तो प्रभावपूर्ण ढंग से अपने विचार व्यक्त करते है, लेकिन कुछ विद्यार्थी उसमें दक्षता स्तर तक नहीं पहुँचते। उनकी मातृभाषा का अनुच्छेद लिखने को कहॉ या कहानी लिखने को कहीं तो उसमें वह अनेक प्रकार की लेखन सम्बन्धी अशुध्दियॉ करते है।

प्रस्तुत शोधकार्य लेखन अशुध्दियॉ जानने और निराकरणीय सुझाव देने के उद्देश्य से किया गया है। विद्यार्थियों के लेखन की अशुध्दियॉ जानकर उनको लेखन में दक्ष बनाने के लिए इस अध्ययन का महत्व बढ़ जाता है।

प्राथमिक स्तर पर ही इन अशुध्दियों का निराकरण अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करते समय उसको हिन्दी राष्ट्रभाषा और अंग्रेजी भाषा समवेत बाकी के विषय भी पढ़ने होते है। अगर

उसका मातृभाषा का ज्ञान कम है, तो वह बाकी भाषा में भी कमजोरी महसूस करेगा। इन सब परिणामों को हटाने के लिए यह मातृभाषा मराठी के विद्यार्थियों के मराठी भाषा लेखन की अशुध्दियॉओं का अध्ययन करने की आवश्यकता अधिक बढ़ गई है।

सारांश, किसी भी अध्याय को संक्षिप्त करने का प्रयास होता है। जिसके द्वारा अध्याय को संक्षिप्त और सरल रूप से समझा जा सके। इस अध्याय में लघुशोध का सारांश एवं अध्याय चतुर्थ में दी गए प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही अध्ययन के आगे सम्बन्धित अध्ययन को विभिन्न क्षेत्रों में करने के लिए सुझाव देने का प्रयास किया गया है।

5.2 समस्या कथन :–

कक्षा छठवीं के मराठी भाषी विद्यार्थियों के मराठी भाषा लेखन की अशुध्दियों का अध्ययन एवं सुझाव।

5.3 शोध के चर :–

1) <u>स्वतंत्र चर :–</u> 1. लिंग :– छात्र–छात्राएँ।

2. विद्यालयः– शासकीय–अशासकीय।

2) <u>आश्रित चर</u> :–

मराठी भाषा लेखन की अशुध्दियों का अध्ययन।

मात्राएँ, विरामचिंह्न, संयुक्ताक्षर, वर्ण, शब्द, अनुच्छेद रचना।

5.4 शोधकार्य के उद्देश्य :–

1. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी विद्यार्थियों के मराठी भाषा लेखन की अशुध्दियों का अध्ययन करना।

2. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के मराठी भाषा लेखन की अशुध्दियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. कक्षा छठवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के मराठी भाषा लेखन की अशुध्दियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी विद्यार्थियों के मराठी भाषा लेखन की अशुध्दियों के कारणों को जानना।
5. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी विद्यार्थियों के मराठी भाषा लेखन की अशुध्दियों के निराकरण हेतु सुझाव देना।

5.5 शोध की परिकल्पनाएँ :–

1. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में मात्राओं सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में विराम चिह्नो सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में संयुक्ताक्षर सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में वर्ण सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में शब्दों सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में अनुच्छेद रचना सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में हुई कुल अशुध्दियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
8. कक्षा छठवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के

2. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के मराठी भाषा लेखन की अशुध्दियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. कक्षा छठवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के मराठी भाषा लेखन की अशुध्दियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी विद्यार्थियों के मराठी भाषा लेखन की अशुध्दियों के कारणों को जानना।
5. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी विद्यार्थियों के मराठी भाषा लेखन की अशुध्दियों के निराकरण हेतु सुझाव देना।

5.5 शोध की परिकल्पनाएँ :–

1. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में मात्राओं सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में विराम चिह्नो सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में संयुक्ताक्षर सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में वर्ण सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में शब्दों सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में अनुच्छेद रचना सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में हुई कुल अशुध्दियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
8. कक्षा छठवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन में मात्राओं सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

9. कक्षा छठवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन में विरामचिह्नो सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
10. कक्षा छठवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन में संयुक्ताक्षर सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
11. कक्षा छठवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन में वर्ण सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
12. कक्षा छठवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन में शब्दों सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
13. कक्षा छठवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन में अनुच्छेद रचना सम्बन्धी अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
14. कक्षा छठवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन में हुई कुल अशुद्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5.6 शोध की परिसीमाएँ :–

- प्रस्तुत अध्ययन महाराष्ट्र राज्य के अहमदनगर जिले में स्थित नेवासा तहसील के 4 विद्यालय तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन में मराठी भाषा अध्ययनरत विद्यार्थियों को सीमित रखा है।
- इस अध्ययन में कुल 80 विद्यार्थी लिए गये है। उसमें शासकीय विद्यालय के 40 और अशासकीय विद्यालय के 40 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में लिया है।
- इसमें शासकीय विद्यालय के 40 विद्यार्थियों में 20 छात्र व 20 छात्राएँ और अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों में भी 20 छात्र और 20 छात्राएँ प्रतिदर्श रूप में ली है।
- प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा छठवीं के मराठी भाषा परीक्षण पत्र में मराठी भाषा लेखन के लिए एक अनुच्छेद दिया गया। जिसमें से मात्रा, विरामचिह्न संयुक्ताक्षर, वर्णों, शब्दों, अनुच्छेद रचना आदि. की अशुध्दियाँ देखी है।

5.7 उपकरण और विधि :–

शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का शोधकार्य के लिए चयन किया। शोधकर्ता ने कक्षा छठवीं के मराठी भाषी विद्यार्थियों के मराठी भाषा लेखन की अशुध्दियों का अध्ययन के लिए लेखन कौशलं के आधार पर स्वयं मराठी भाषा विषयक नैदानिक परीक्षण पत्र का निर्माण किया और कारणों के अध्ययन हेतु भी एक प्रश्नपत्र बनाया। जिनका लेखन की मात्रा, विरामचिह्न, संयुक्ताक्षर, शब्द, वर्ण, अनुच्छेद रचना की अशुध्दियॉ और कारण जान सके इसलिए चयन किया।

5.8 आंकडों का विश्लेषण :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शासकीय व अशासकीय विद्यालय में छात्र व छात्राओं द्वारा लेखन की अशुध्दियों के आंकडे एकत्रित किए गये। उनके विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए मध्यमान (M), मानक विचलन (S.D.) एवं 'टी' मान का उपयोग किया गया और अशुध्दियों के कारणों का अध्ययन के लिए विश्लेषण हेतु प्रतिशत का उपयोग किया गया।

5.9 निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा उद्देश्य एवं शून्य परिकल्पनाओं के विश्लेषण, व्याख्या करने के बाद निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए–

❖ <u>उद्देश्य एक के अनुसार</u> :–

कक्षा छठवीं के मराठी भाषी विद्यार्थियों के लेखन कौशलं परीक्षण से यह पाया गया कि– जल्दबाजी लापरवाही तथा नियमित लेखन न करने की आदत के कारण लेखन में कठिनाई अनुभव करते है और कई प्रकार की जैसे– मात्रा, विरामचिह्नों, बिन्दु, संयुक्ताक्षर, वर्ण, शब्द, अनुच्छेद रचना आदिं. सम्बन्धी अशुध्दियॉ करते है।

❖ <u>परिकल्पनाओं के अनुसार</u> :–

- कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में मात्राओं सम्बन्धी अशुध्दियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में विरामचिह्नों सम्बन्धी अशुध्दियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में संयुक्ताक्षर सम्बन्धी अशुध्दियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में वर्ण सम्बन्धी अशुध्दियों में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में शब्दों सम्बन्धी अशुध्दियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में अनुच्छेद रचना सम्बन्धी अशुध्दियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कक्षा छठवीं के मराठी भाषी छात्र एवं छात्राओं के लेखन में कुल अशुध्दियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उपरोक्त पकिल्पनाओं से प्राप्त परिणाम के आधार से छात्र एवं छात्राओं के लेखन में समप्रमाण में अशुध्दियॉ पाई गई।

- कक्षा छठवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन में मात्राओं सम्बन्धी अशुध्दियों में सार्थक अन्तर है। शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में लेखन में मात्राओं सम्बन्धी अशुध्दियॉ ज्यादा हुई।
- कक्षा छठवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन में विरामचिह्नों सम्बन्धी अशुध्दियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

- कक्षा छठवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन में संयुक्ताक्षर सम्बन्धी अशुध्दियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कक्षा छठवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन में वर्ण सम्बन्धी अशुध्दियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कक्षा छठवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन में शब्दों सम्बन्धी अशुध्दियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कक्षा छठवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन में अनुच्छेद रचना सम्बन्धी अशुध्दियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कक्षा छठवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के लेखन में कुल अशुध्दियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

❖ <u>लेखन की अशुध्दियों के कारणों के परिक्षण के अनुसार</u> :–

- विद्यार्थियों को मराठी का शुध्द वर्तनीरूप व्याकरण के नियमों की जानकारी न होने के कारण लेखन में अशुध्दियॉं हुई ।
- विद्यार्थियों के लेखन की अशुध्दियों पर शिक्षक के पढ़ने के ढंग का भी असर होता है। क्योंकि शिक्षक के उच्चारण की अस्पष्टता, आवाज छोटा, आरोह–अवरोह आदि के कारण भी अशुध्दियॉं होती है।
- जिन विद्यार्थियों की अधिक अशुध्दियॉं पाई गई; उनमें से कुछ विद्यार्थियों को लिखने का कार्य अच्छा नहीं लगता; तो कुछ लड़के ठीक से सुनाई न देने के कारण अशुध्दियॉं कर बैठे यह पाया गया।
- विद्यार्थियों के लेखन में अशुध्दियॉं के कारणों में एक कारण यह है कि, विद्यार्थी पढ़ाई में अच्छी तरह ध्यान नहीं देते, इसलिए अशुध्दियॉं करते है।
- विद्यार्थियों को गृहकार्य देकर, उनको प्रबलन आदि न देकर उनको सजा देने के कारण भी डर से विद्यार्थी जल्दबाजी में लिखते है, तो अशुध्दियॉं होती है यह भी एक कारण निकाला गया।

- विद्यार्थियों की मात्राओं में अंतर न जानने के कारण मात्राओं सम्बन्धी अशुध्दियों का अधिक प्रमाण पाया गया।
- विद्यार्थियों के माता–पिता का निरक्षर होना भी एक महत्वपूर्ण कारण इस अध्ययन द्वारा पाया गया, क्योंकि माता–पिता को अपना बेटा–बेटी क्या पढ़ रहे है, वह पता न होने के. कारण वह उनकी लेखन की तैयारी नहीं करवा सकते, उसके कारण लेखन में उनकी कमजोरी देखी गई। जादातर अशुध्दियॉ करनेवाले जितने विद्यार्थी है, उनके माता–पिता निरक्षर ही है।
- विद्यार्थियों को विद्यालय एवं घर में लेखन सम्बन्धी मार्गदर्शन और आवश्यक सामग्री न मिलने के कारण भी उनकी अशुध्दियॉ हुई ऐसा इस अध्ययन में देखा गया।

5.10 सुझाव :–

उपर्युक्त निष्कर्ष एवं परिणामों को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों के मराठी भाषा लेखन की अशुध्दियों के निवारण के लिए निम्नलिखित सुझाव है।

➢ <u>छात्र–छात्राओं को सुझाव</u> :–

- अध्ययन में आनेवाली समस्या निःसंकोच शिक्षक को बताना चाहिए।

➢ शाला में दिया हुआ गृहकार्य नियमित रूप से करना चाहिए ताकि, लेखन कौशलं का विकास हो सके।

➢ शाला में शिक्षक की गैरहाजरी में खाली समय में किसी अच्छे पाठ का क्रमशः वाचन व लेखन करना चाहिए।

➢ भिन्न–भिन्न प्रकार की स्पर्धाओं में हिस्सा लेना चाहिए ताकि, लेखन, पठन आदि. कौशलों का विकास हो सके।

➢ <u>शिक्षकों को सुझाव</u> :–

- शिक्षकों को मराठी भाषा पढ़ाते समय पाठ्यपुस्तकों के विषयवस्तु पर नहीं बल्कि, भाषा के कौशलों पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

- लेखन से सम्बन्धित गृहकार्य देना चाहिए तथा प्रत्येक विद्यार्थियों के उत्तरपुस्तिका में वर्तनी की अशुध्दियों की जांच करनी चाहिए तथा अंको को शब्दों में लिखकर अभ्यास करवाना चाहिए।
- ऐसे क्रियाकलापों का आयोजन करना चाहिए, जिससे छात्र अपनी त्रुटियों को स्वयं दूर करने का प्रयास करें।
- उचित गति से, योग्यता से पढ़ने–लिखने का अभ्यास करवाना चाहिए।
- कक्षा स्तर पर मराठी शुध्दलेखन पर विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देना चाहिए।

➢ <u>पालकों को सुझाव</u> :–

- परिवार में ही बच्चों को माता–पिता के द्वारा भाषा की शिक्षा मिलती है। अतः बालकों में भाषा सम्बन्धी कठिनाईयों को दूर का सहयोग आवश्यक है। करने के लिए माता–पिता
- घर में माता–पिता द्वारा ही मराठी भाषा बालकों के साथ बोलते समय व्यवहार में लाई जाती है, जिसका शुध्द स्वरूप बच्चों को प्राप्त होना जरूरी होता है।
- पालक द्वारा बच्चों को समझाना चाहिए कि, शिक्षा के माध्यम से प्रगति होती है।

➢ <u>भावी शोध हेतु सुझाव</u> :–

- प्रस्तुत अध्ययन सिर्फ लेखन कौशलं पर ही है। श्रवण–कथन–वाचन–लेखन चारों को मिलाकर विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।
- इस प्रकार के शोधकार्य शहरी और ग्रामीण विद्याार्थियों के शुध्दलेखन के अंतर को जानने के लिए भी किया जा सकता है।
- इसी प्रकार का शोधकार्य अन्य भाषाओं में किया जा सकता है।
- बड़ा न्यादर्श लेकर इसी कार्य का उच्च स्तर पर अध्ययन किया जा सकता है।

- मराठी भाषा लेखन, वाचन आदि. पर उपचारात्मक शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अनुदेशनात्मक सामग्री का उपयोग करके मात्रा, विरामचिह्नों, शब्द, वर्ण, अनुच्छेद आदि. सम्बन्धी लेखन में प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- मराठी भाषी छात्रों को हिन्दी भाषा अधिगम में कठिनाईयॉ इस विषय पर भी अध्ययन किया जा सकता है।
- मराठी भाषा अधिगम का उपलब्धियों पर पड़ने वाला प्रभाव भी इस प्रकार के अध्ययन से देखा जा सकता है।
- मराठी भाषा एवं हिन्दी भाषा शिक्षकों के भाषा ज्ञान का अध्ययन किया जा सकता है।
- विद्यार्थियों के अभिभावकों के शैक्षिक स्तर, सामाजिक स्तर का विद्यार्थियों के भाषा विषयक उपलब्धी पर प्रभाव इस प्रकार का अध्ययन किया जा सकता है।
- कक्षा वातावरण का विद्यार्थियों के लेखन पर क्या प्रभाव पडता है; इसका भी अध्ययन किया जा सकता है।

5.11 शैक्षणिक उपयोग :–

- प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों में सीखने की तीव्रता होती है। अतः वह लेखन में रूचि लेते है, इसलिए इस स्तर पर पठन, लेखन आदि भाषिक कौशलं पर ध्यान देना आवश्यक है।
- बच्चे भाषा की जटिल संरचना को सहजरूप से सीखते है। इसलिए इस दृष्टि से उनका मूल्यांकन उनकी अवस्था के अनुरूप होना चाहिए।
- भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। इसलिए विद्यार्थियों की भाषा में दक्षता का प्रभाव उनके अन्य विषयों पर भी पड़ता है। अतः भाषा के अध्यापन पर ही बालकों की सफलता निर्भर है।

- अशिक्षित परिवार के बालकों की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि इन परिवारों में भी प्रतिभाएँ जन्म लेती है। आर्थिक व सामाजिक रूप से पिछडे हुए परिवारों के बच्चों में भी सृजनता होती है।
- लेखन कौशलं की अशुध्दियॉ दूर करने और विकास हेतु सहृदयता एवं धैर्य व निष्ठा से कार्य करने की आवश्यकता है।
- शिक्षा के सर्वव्यापीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भाषा सशक्त भूमिका निभा सकती है। अतः बालकों में भाषा के इन कौशलों में लेखन कौशल का विकास अध्यापक का अनिवार्य दायित्व माना जाना चाहिए।